QUARTERLY JOURNAL • त्रैमासिक पत्रिका

Shri Sai Samiti Noida

श्री साँई समिति नौएडा

जय साँई राम

श्री साँई मंदिर, सैक्टर 40, नौएडा - 201303

[For Private Circulation Only]

वर्ष (10) अंक सं. (20) फरवरी, 2013 - फरवरी, 2014 ● समाचार ● आध्यात्मिक लेख ● भक्तों के अनुभव ● चित्र

अनुपम स्वतंत्रता दिवस - 2013, भूलेगा नहीं

विद्यार्थियों का, उन्हीं के द्वारा, उनके लिए रंगा-रंग कार्यक्रम

मुख्य अतिथि - श्री बी॰के॰ दीक्षित - संयुक्त आयुक्त - इन्कम टैक्स, अध्यक्ष - श्री विजय आर॰ राघवन, पूर्व अध्यक्ष - श्री नीरज प्रकाश

स्वतंत्रता दिवस 15.08.2013 - झलकियाँ

साँई मन्दिर, सैक्टर-40, नौएडा में साँई विद्या निकेतन द्वारा 67वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री बी॰के॰ दीक्षित-संयुक्त आयकर आयुक्त तथा अध्यक्ष श्री विजय आर॰ राघवन थे। ध्वाजारोहण श्री बी॰के॰ दीक्षित के कर-कमलों द्वारा प्रातः 9 बजे किया गया। ध्वजा की सलामी साँई विद्या निकेतन के चारों हाउस कैप्टनों ने की तथा राष्ट्रीय गान में सभी छात्र तथा अतिथिगण सम्मिलित हुए। तत्पश्चात् भारत के प्राचीन वैभव, परतन्त्रता तथा आज़ादी की लड़ाई तथा प्रगति को दिखाते हुए लघुनाटिका का मंचन साँई विद्या निकेतन के छात्रों ने प्रस्तुत किया। मंचन के समय

श्री विजय राघवन, श्री बी॰के॰ दीक्षित, श्री नीरज प्रकाश, मे॰ज॰आर॰पी॰ चड्ढा और श्री बी॰के॰ पाण्डेय।

दर्शकगण मंत्रमुग्ध होकर आनंद लेते रहे। लघुनाटिका के मंचन के पश्चात् एक क्विज़ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें नौएडा के चार पब्लिक स्कूल यथा एमिटी, रियान इंटरनेशनल, खेतान, महर्षि विद्या मन्दिर एवं साँई विद्या निकेतन की टीमों ने भाग लिया। प्रत्येक टीम तीन छात्र क्रमशः कक्षा 1 व 2 से एक, कक्षा 3 व 4 से एक तथा कक्षा 5 से एक छात्र द्वारा बनाई गई थी। इसका संचालन क्विज़ मास्ब्र अतिथि आराधना द्वारा किया गया। प्रस्तुतिकरण अदभुत था। जिसमें टीमों के प्रत्येक छात्र ने भाग लिया। क्विज़ मास्टर ने दर्शकों को भी प्रश्न पूछ बांधे रखा। सभी प्रश्न भारत की स्वतंत्रता पर आधारित

विद्यार्थियों के 'हाउस' श्रद्धा, सबूरी, सत्य, ज्ञान के अगुआ

श्री बी॰के॰ दीक्षित, संयुक्त आयुक्त - इन्कम टैक्स

थे। टीमों की स्पर्धा देखते ही बनती थी। अन्त में सबसे अधिक 90 अंक लेकर खेतान पब्लिक स्कूल ने चल विजय ट्राफी उठाई तथा एमिटी स्कूल ने 88 अंक प्राप्त कर रनरअप ट्राफी ग्रहण की। इन दोनों कार्यक्रमों की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन विजयी छात्रों को मैडल व पुरस्कार देकर तथा समस्त बच्चों को मिष्ठान देकर किया गया। अतिथिगण के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई थी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

...संपादकीय

प्रश्न करें स्वयं से

1. मैं श्री श्री 108 साँई बाबा के मन्दिर क्यों आता हूँ?
   (क) क्यों कि बाबा से मैं इतना अधिक प्रेम करता हूँ कि उनकी प्रतिमा के दर्शन किए बगैर जीवन निरर्थक प्रतीत होता है?
   (ख) क्या मैं अपनी व्यस्त जीवनचर्या से कुछ समय निकाल कर प्रार्थना, आरती गायन, पूजन आदि के द्वारा आत्मा का उत्थान करना चाहता हूँ?
   (ग) क्या मेरा जीवन सांसारिक कठिनाइयों से घिर गया है और मैं उनसे बिना मन्दिर आए और बाबा का अशीर्वाद प्राप्त किए बिना उनसे नहीं जूझ सकता हूँ ?
   (घ) अथवा, जीवन की कठिनाई की पीड़ा से निर्धारित मार्ग द्वारा निवारण के लिए बाबा की कृपा का पात्र बनना चाहता हू?
2. क्या मुझे स्मरण है कि बाबा ने कहा था, जितने बीज बोए जाऐं, सब के सब पेड़ नहीं बनते। क्या मेरा मन मानता है कि जितनी में आशा है वह सब का सब मन्दिर आने से प्राप्त नहीं होगा?
3. जो कुछ मैं बाबा का भेंट करता हूँ, क्या वह मेरी निर्दोष आय में से है ?
4. क्या मैं बाबा को कपट द्वारा प्राप्त आय में से भेंट करना उचित समझता हूँ?
5. क्या मुझे याद नहीं है कि बाबा ने एक रानी, जो पालकी में आई थी, उससे सोने-चांदी की भेंट लेना अस्वीकार कर दिया था और एक बूढ़ी औरत से एक चपाती और प्याज़ की भेंट स्वीकार कर ली थी?
6. क्या मैं मन्दिर अपने मन की सांत्वना के लिए, परिवार के सदस्यों की उपेक्षा करके आता हूँ ? मुझे याद है क्या, कि बाबा ने म्हालसापति को द्वारिकामाई में न रहने देकर अपने परिवार के पास जाने को कहा। क्या मैं अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह उचित रूप से करता हूँ।
7. क्या मैं मन्दिर में जिन लोगों को जानता हूँ उनसे सामाजिक वार्ता अथवा गप-शप के लिए आता हूँ। क्या मेरा मन मानता है कि मन्दिर में वार्तालाप केवल धार्मिक, बाबा की लीलाऐं आदि अध्यात्मिक विषयों पर ही होना चाहिए?
8. क्या मेरे मन में आस्था है कि अपना समय बाबा का ध्यान करने, प्रार्थना करने, आरती एवं भजन करने और श्री साँई सच्चरित्र जैसी पुस्तकें पढ़ने में ही मन्दिर में उपयोग होना चाहिए ? बाबा ने कहा था कि जो दूसरे की बुराई करता है वह शूकर के समान विष्ठा खाता है।
9. क्या ऐसा विचार मेरे मन में है कि मेरी भक्ति का स्तर दूसरों से उच्चतर है। यह विचार नितांत नकारात्मक है, ऐसा मेरा मन मानता है क्या?
10. हम अपने अतिरिक्त दूसरों से इस जीवन में ऋणानुबंध के कारण मिलते हैं। यदि हम इस बात को मानते हैं तो हमें अपनी कठिनाईयों और पीड़ा होने के कारण हमें हर समय झल्लाना और रोना-धोना नहीं चाहिए। मानते हैं क्या?
11. क्या मुझमें पर्याप्त मात्रा में श्रद्धा एवं सबूरी है कि मैं बाबा के निकट आ सकूँगा। क्या मेरी श्रद्धा सांसारिक अवस्था के कारण घटती-बढ़ती रहती है। क्या मैं अपने गुरू अथवा मार्ग-दर्शक बदलता रहता हूँ?
12. बाबा ने सदा भक्तों से कहा था कि अपने में गुण पैदा करें जैसे कि दया, अभेद-भाव, सहानुभूति, सहिष्णुता और दूसरों के प्रति त्याग। क्या मुझमें त्याग की भावना है और जो मैं दूसरों के लिए करता हूँ वह पर्याप्त है क्या?
13. बाबा ने कहा था कि जब दो लोग आपस में झगड़ रहे हों तो उन्हें वह प्रिय है जो दूसरे को चोट न पहुँचाए और दूसरे के विकार को उचित दृष्टि से देखे। क्या मैं ऐसा करता हूँ?
14. बाबा के प्रति अपनी भावुक भक्ति को अपने हृदय में संजो कर रखना चाहिए। क्या मैं बाबा के प्रति अपनी भावुकता दूसरों को दिखाने के लिए प्रदर्शित करता हूँ ?
15. मैं दूसरों से अपेक्षा रखता हूँ कि वह मुझसे सहानुभूति रखेगें और मुझे ध्यान पूर्वक समझेंगे। क्या मेरा मन मानता है कि दूसरे भी मुझसे यही अपेक्षा रखेगें?
16. सम्भव है कि दूसरों की भक्ति का स्तर ज़्यादा गहरा और उत्तम हो। इसलिए क्या यह उचित है कि मैं दूसरों से ईर्ष्या की भावना रखूं ? इससे कोई लाभ तो है नहीं।
17. जो भी कार्य अथवा सेवा बाबा के लिए मेरे द्वारा की जाती है, क्या मैं उसे निष्कपट ढंग और लगन से करता हूँ, या फिर सोचता हूँ कि "अरे यह भी चलेगा"?
18. हम चाहते हैं कि साँई बाबा हमारे सब कार्य और कठिनाईयों का ध्यान रखे। समान रूप से बाबा का कार्य अथवा सेवा क्या हम बराबर की शुद्धता व लगन से करते हैं?
19. कर्म की विधि, अर्थात उचित अथवा अनुचित कार्य का वैसा ही परिणाम, को हम भंग करने की चेष्टा करते हैं क्या। ऐसा करने पर क्या हमें बाबा की कृपा प्राप्त हो सकती है?
20. हमें प्रथम चेष्टा बाबा के उपदेश के अनुसार उनकी सेवा के निमित्त करनी चाहिए ताकि हम बाबा की कृपा के पात्र बने। उपरिलिखित प्रश्नों के अनुसार हमें अपने में गुण पैदा करने चाहिए तो निश्चित ही हमें बाबा का आशीर्वाद, बाबा की कृपा की अनुभूति होगी।

(Excerpt / Translation from Guruji Satpathy's Book - May I Answer, Editor)

बालकृष्ण पाण्डेय

(पृष्ठ 1 का शेष)

अनुपम... झरोखा

मुगल शासकों का भारतीयों पर अत्याचार - छात्रों द्वारा नाटक

अध्यक्ष - श्री राघवन के द्वारा पारितोषिक, एवं छात्र का उत्साह वर्धन

1857 की लड़ाई अंग्रेजों के साथ (लक्ष्मीबाई) - छात्रों द्वारा नाटक

सर्वप्रिय मुख्य सचिव ब्रिग॰ जी॰के॰ मनूचा द्वारा संबोधन

आजादी की घोषणा के बाद नेहरू जी द्वारा तिरंगा फहराना तथा भारतीयों का जश्न मनाना - छात्रों द्वारा नाटक

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - एमिटी, खेतान, रेयान, महाऋषि विद्या मन्दिर और साँई विद्या निकेतन के छात्रों के बीच।

लोहड़ी, रविवार - 13.01.2013 - प्रति वर्ष की भांति यह पर्व भी बड़े धूम-धाम के साथ बाबा के समक्ष मनाया जाता है। रेवडियां, मूंगफली, गजक, मक्का के फूले आदि प्रसाद

भक्तगण लोहड़ी के त्यौहार पर अग्नि प्रज्ज्वलन करने के बाद इर्द-गिर्द कीर्तन एवं नृत्य मुद्रा में।

वितरण किया जाता है और ढोल-नगाड़ों पर नाच-गाने के साथ पर्व का आनन्द प्राप्त किया जाता है।

पिकनिक, रविवार - 10.02.2013 - प्रति वर्ष की भांति पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गति-विधियां चलती रहीं। छात्रगण कुछ बड़े मन्दिरों और एतिहासिक स्थानों पर गए और भोजन आदि का व मेल-मिलाप का आनंद रहा।

भक्त शिरोमणि हनुमान जी के दर्शन

वास्तु-कला सौदंर्य का प्रभावशाली रूप - छत्तरपुर का देवी मन्दिर

रामनवमी, रविवार - 14.04.2013 - प्रात: बाबा का मंगल स्नान दूध से किया गया। राम दरबार लगा कर राम अमृतवाणी पाठ बाबा के

भाग्यशाली भक्तों को श्री साँई नाथ महाराज के भव्य दर्शन, आगे पुण्य-स्वरूप बाबा के चरण विद्यमान हैं

(शेष पृष्ठ 4 पर)

(पृष्ठ 3 का शेष)

अनुपम... झरोखा

समक्ष किया गया। दुर्गा-पूजन, हवन और भगवान श्री राम की आरती के साथ-साथ भक्त अधिक संख्या में उपस्थित हुए और भक्तिमय रस के

चले, चले साँई बाबा, नगर भ्रमण को

प्रस्थान से पहले भक्तों ने बाबा की बारी-2 से आरती की, अनन्य भक्ति की कामना में

साँई विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा राम दरबार की झांकी

सरोवर में डूबे रहे थे। नित्य समयानुसार बाबा की आरती और भण्डारा प्रसाद चलता रहा। मुख्य आकर्षण बाबा की पालकी यात्रा नौएडा के विभिन्न सैक्टरों की तरफ से भ्रमण करती हुई सांय धूप आरती के समय तक मन्दिर वापस पहुँची। रास्तों में जगह-2 पालकी यात्रा

पालकी में श्री साँई नाथ महाराज, सुसज्जित

श्री साँई बाबा अपने रथ में, भक्तों के बीच, नगर भ्रमण करते हुए

के स्वागत हेतु श्रद्धालु भक्तों ने जल-पान सेवा का भी प्रबन्ध किया। दोहपर 3 बजे बाबा की पूजा / आरती के बाद संस्थान की प्रबंधक समिति के सदस्यों द्वारा पालकी यात्रा की इस बड़ी और भव्य झांकी को प्रस्थान की विदाई दी गई।

गुरूपूर्णिमा, सोमवार 22.07.2013 - गुरूपूर्णिमा दिनांक 22.07.2013 सोमवार को साँई बाबा की सद्गुरू श्रद्धा से ओत-प्रोत

प्रसिद्ध गायक एवं प्रवचनकर्ता श्री आर॰के॰ शर्मा का सतकार, मुख्य सचिव एवं कोषाध्यक्ष द्वारा मन्दिर के मुख्य भवन में

काकड़ आरती प्रारम्भ हुई तत्पश्चात दूध से मंगल स्नान कराकर श्रृंगार कर वस्त्र धारण कराऐ गए। घट स्थापना, श्री गणेश पूजन, ग्रह

भक्तों के बीच, श्रीमती राघवन एवं श्री आर॰के॰ शर्मा, बाबा की शेज आरती सम्पन्न करते हुए

पूजन कर हवन किया गया तथा सत्यनारायण व्रत कथा कराई गई। साँई नाम जाप, श्री साँई सच्चरित्र सार हिन्दी दोहावली पाठ, पालकी भ्रमण एवं मन्दिर परिसर में भजन-कीर्तन - श्री आर॰के॰ शर्मा द्वारा हुआ। प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम पूर्ण किया गया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी - बुधवार - 28.08.2013 - जन्माष्टमी के अवसर पर साँई मन्दिर सैक्टर-40 नौएडा के मुख्य हॉल में साँई बाबा के समक्ष साँई विद्या निकेतन के छात्र-छात्राओं द्वारा श्री कृष्ण की लीलाओं का

जन्माष्टमी को पावन झूले में, बाल रूप श्री साँई कृष्ण, मन्दिर के पूजा मंच पर

मंचन नृत्य नाटिका के माध्यम से प्रस्तुतिकरण किया गया। मुख्य विशेषता छात्र-छात्राओं का उत्साह था। बार-बार बांके बिहारी की जय का उद्घोष हो रहा था। पूरा हॉल दर्शकों द्वारा खचाखच भरा हुआ था। ध्यान केन्द्र में भी

(शेष पृष्ठ 5 पर)

(पृष्ठ 4 का शेष)

अनुपम... झरोखा

दर्शक श्री कृष्ण जी की लीलाओं का भाव-विभोर होकर दर्शन कर रहे थे। इस प्रकार यह पता ही नहीं लगा कि कब एक

जन्मष्टमी के उपलक्ष में, बाल-गोपाल द्वारा माखन चोरी, दर्शन करते हुए साँई विद्या मन्दिर सुसज्जित के बाल-वृंद

घंटे का समापन हो गया। इस कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण के लिए स्कूल की प्रधानाध्यापिका एवं अध्यापिकाएं बधाई के पात्र हैं। विशेषतय कोरियोग्राफर रेखा मिश्रा जिनके प्रथक परिश्रम से यह संभव हो सका। यशोदा नंदन श्री कृष्ण के रूप में बाबा को देखा गया और पांडुरंग के रूप में भक्तों ने उनका कीर्तन किया। अपने मन्दिर में बाल-मुकुन्द का झूला सजा। श्री कृष्ण आरती हुई। माखन-मिश्री का भोग लगा और रात्रि 12 बजे तक भक्तों ने कार्यक्रमों का आनन्द लिया।

समाधि दिवस (पुण्यतिथि), सोमवार - 13.10.2013 - विजय दशमी (दशहरा) के दिन बाबा ने समाधि ली थी। शंख ध्वनि के साथ दोपहर 2.30 बजे से 2.32 बजे तक 2 मिनट का मौन लेकर सभी भक्तों ने सांय 4 बजे से 6 बजे तक श्री साँई सच्चरित्र का मौन पाठ भी किया। सांय 7 बजे से प्रसिद्ध साँई मन्दिर की साँई भजन मण्डली द्वारा भजन-कीर्तन किया गया। बाबा के शरीर के निधन के सम्मान में शोक आरती और अगले दिन प्रात: काकड़ आरती नहीं हुई।

श्वेत वस्त्र धारण किए हुए श्री साँई बाबा संसार त्याग करने, अनंत समाधि धारण करने के पूर्व। सबको ज्ञात है कि तत्पश्चात् बाबा ब्रह्मांड के कण-कण में विलीन हुए

दीपावली, बृहस्पतिवार - 03.11.2013 - दीपावली का महोत्सव जगह-जगह दीपकों की रोशनी में मनाया गया।

श्री साँई विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा निर्मित कला-कृति

मन्दिर के द्वारा सुसज्जित तश्तरी में दीपक भक्तों ने ग्रहण किया और इन दीपकों से सामूहिक आरती की गई

खेल-कूद दिवस, शनिवार - 16.11.2013 हर वर्ष की भांति साँई विद्या निकेतन के छात्र-छात्राओं की खेल-कूद प्रतियोगिताएं दिनांक 16.11.2013 को सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओं में समस्त छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। खेल समारोह का उद्घाटन ***खेतान पब्लिक स्कूल*** के ***प्राचार्य श्री मिश्रा द्वारा*** प्रात: 9.30 बजे

खेद-कूद दिवस के मौके पर अभिवादन पर सम्मिलित छात्र-छात्राऐं

सैक रेस में भाग लेते हुई छात्राऐं

श्री मिश्रा प्राचार्य खेतान पब्लिक स्कूल - छात्राओं को पुरस्कार वितरण करते हुए

किया गया। तत्पश्चात् श्री आर॰एस॰ सभरवाल - ***डी॰जी॰एम॰, एच॰आर॰, सी॰एस॰आर॰*** भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर छात्र-छात्राओं एवं उनके माता-पिता का उत्साहवर्धन किया। समारोह की विशेषता बच्चों

(शेष पृष्ठ 6 पर)

(पृष्ठ 5 का शेष)

अनुपम... झरोखा

मेजर जन॰ आर॰पी॰ चड्ढा - उपाध्यक्ष - साँई मन्दिर, छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरण करते हुए

श्री आर॰एस॰ सभरवाल डी॰जी॰एम॰, एच॰आर॰-एन॰टी॰पी॰सी॰ - छात्र-छात्राओं को मेडल पहनाते हुए

का उत्साह था जो अपने बच्चों को जीतने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। कार्यक्रम का समापन जलपान ग्रहण कर किया गया।

आई॰एस॰ओ॰ ऑडिट, बृहस्पतिवार - 05.12.2013 - संस्थान की गुणवत्ता प्रणाली के मार्गदर्शन को सुचारू रूप से *(प्रात: 10.15 से दोपहर 1 बजे तक)* बोर्ड रूम से शुरू हुई।

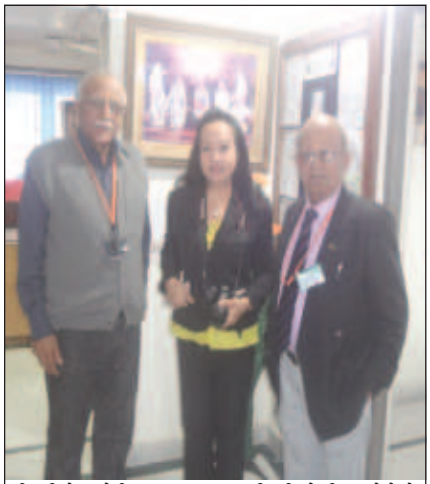

श्री वी॰के॰ बेरी - एम॰आर॰, श्रीमती ऐलीन कोलेडो एवं मेजर जन॰ आर॰पी॰ चड्ढा।

उसके संस्थान के विभिन्न स्थलों का ऑडिट किया गया। जैसे कि:- जूता-सेवा, रिसेप्सन, सेवाकक्ष, सर्विस सेंटर, राशन स्टोर, मन्दिर परिसर, ध्यानकेन्द्र, गुरूस्थान, मेन हॉल। उसके प्रबंधन प्रतिनिधि कार्य, प्रक्रिया, आंतरिक लेखा परीक्षण, प्रबंधन समीक्षा, ग्राहक संतुष्टि फीडबैक, ग्राहकों की शिकायतों का इत्यादि निरीक्षण टीम लीडर - बी॰एस॰आई॰ एलीन टी॰ कोलेडो द्वारा किया गया।

क्रिसमस दिवस, बुधवार - 25.12.2013 - सबका मालिक एक है की उक्ति को चरितार्थ करते हुए दिनांक 25.12.2013 को

क्रिसमस के अवसर पर साँई विद्या निकेतन छात्र-छात्राओं द्वारा प्रदर्शित एक झांकी

क्रिसमस दिवस के रूप में मनाया गया। सांता क्लाज का आगमन हुआ और उन्होंने बच्चों एवं बड़ों को क्रिसमस के उपहार बांटे।

गणतंत्र दिवस, रविवार - 26.01.2014

संस्थान द्वारा संचालित नि:शुल्क विद्यालय "श्री साँई विद्या निकेतन" की ओर से गणतन्त्र

राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए श्री साँई समिति के अध्यक्ष श्री विजय आर॰ राघवन एवं सहयोगी

दिवस के शुभ अवसर पर स्कूल परिसर को सजा धजा कर ध्वजा रोहण राष्ट्रगान से प्रारम्भ किया जाता है और छात्रों द्वारा रंगा-रंग कार्यक्रम

राष्टीय्य ध्वज के हाउस कैप्टन सावधान मुद्रा में खड़े हुए

जय हो संगीत में नृत्य करते हुए साँई विद्या निकेतन के छात्र-छात्राऐं।

गणतंत्र दिवस के समारोह का आनंद लेते हुए साँई विद्या निकेतन के छात्र-छात्राऐं

प्रस्तुत किए गए। संस्थान के अध्यक्ष श्री वी॰आर॰ राघवन जी द्वारा स्कूल के छात्रों को पुरस्कृत किया गया और अध्यक्ष जी के संदेश ने छात्रों का उत्साह बढ़ाया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ 6 का शेष)

अनुपम... झरोखा

बसंत पंचमी, मंगलवार - 04.02.2014 - बसन्त पंचमी पर पीले रंग के फुलों से मन्दिर में बाबा का दरबार सजाया गया। पीले भोग से बाबा का पूजन कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रात:

बसंत पंचमी के अवसर पर पीले फूलों से भव्य सजावट की गई और हवन का भक्तगण

हवन-पूजन आदि कार्यक्रम हुए। भक्तों ने श्रद्धा पूर्वक पूजन पाठ का भक्तिमय होकर आनन्द लिया और श्री साँई विद्या निकेतन में माँ सरस्वती का पूजन किया गया।

महाशिवरात्रि, गुरूवार - 27.02.2014 - मन्दिर सजावट, बाबा का मंगल स्नान दूध से शिव परिवार पूजन, रुद्राभिषेक एवं रुद्रजाप,

गुरुस्थान में महाशिव रात्रि को शिव स्वरुप श्री साँईनाथ महाराज का पंचामृत से अभिषेक सम्पन्न हुआ

बाबा के मुख्य द्वार पर महाशिव रात्रि पर्व पर भक्तजनों की अपार भीड़

भजन-कीर्तन, भण्डारा फल प्रसाद वितरण सब सम्पन्न हुए।

SHRI SAI BABA THE PHYSICIAN

I am one of the several doctors working in Sai Dharmarth Chikitsalya. We get approximately 200 to 300 patients in OPD on a daily basis who generally get attended and are apparently satisfied. One of Sai Bhajans is "Karta hai tu sab-kuch, mera naam ho raha hai" which I keep singing in my mind, as I witness in day-to-day experience, such dramatic response to simple common basic medicines and at times even without them.

A couple of times when I inquired from the patient 'Dawai Mili, Kha Li', the reply was "No it was not available and I could not buy, but I am alright". Surprising enough, yet I am not surprised – 'We treat, He cures'.

Sometime back a woman with a grave skin problem of 1 to 2 months' duration turned up. Frankly I was at a loss to diagnose. On the face of it, apparently it looked like a 2nd degree burn covering her back, shoulders, abdomen, and things. My first reaction was to refer her to a skin specialist but that would have left her stranded while she had come with faith in BABA. I prayed for inspiration and went ahead to prescribe. Two days later she came, and behold! There was a 50% improvement; again after 3 days further 25%. She is alright now.

A woman acquaintance of mine (an ardent devotee, and frequent visitor to Sai Mandir), one fine morning came to me in the hospital with some vague complaints of pelvic pain & dysuria. I really do not know, what made one get her investigated thoroughly even for such trivial problems. To cut the long story short, the case emerged to be Cancer Uterus of the most malignant type. The cancer detection team on bio-monthly visit to our hospital helped pick up the case. Ofcourse now she is undergoing treatment in the best cancer hospital. We are thankful to the Lord. Another song hits the mind 'Sai mere raksha karna, Baba mere raksha karna'.

Baba is the guiding light in our day-to-day work. He helps us, help others.

SUCH ARE HIS WAYS – AND YET MORE – I COULD GO ON AND ON

BABA is the divine Light
BABA gives direction

Thank you Baba.

Jai Sai Ram!

P.S.- The chikitsalya was established by an ardent Sai devotee Late Dr. D.D. Talwar, retired C.M.O. from Agra. The family hospital was started with a table & chair Dr. Talwar used to sit under a tree & examine patients. This now stands as a full-fledged hospital with facilities of Path Lab, X-ray, Ultrasound, and Physiotherapy. The free medicines dispensed attain very effective quality because therein lies Baba's grace.

(Submitted by – Dr. Suman Singh)

BEADS FROM THE NECKLACE OF SAI BHAKTI

1. Bhakti is not something to be exhibited. It needs to be cultivated, nurtured and absorbed within and assiduously taken deeper and deeper into the crevices of the heart. In course of time, every pore of the body of the 'Sadhak' would start emitting the fragrance of bhakti.
2. I am merely a blade of straw which the wind may blow away into oblivion any moment. What is significant, of abiding value, is my Baba who saves many a straw from being blown away and yet never let the straw know the secret of its existence.
3. Sai is Compassion Incarnate. He is Love Incarnate. He is the Splendour of the soul, the Distiny of His Bhakta. He is the glorious and ecstatic chant that emerges from the heart of His devotee. Merge the Self in Him, live in Him and become one with Him.
4. By living a life of austerity upto the end of His life on earth when He could have lived a highly ostentatious life, Baba set an example of supreme simplicity. Aren't we His followers making it complex at every step by adding lustre to everything connected with Baba? Let us ponder!
5. The Parbrahm standing bare footed, with a begging bowl, outside the houses of the poor village folk of Shirdi asking for a piece of bread or two – the very epitome of the poorest of the poor-should we not visualize His picture in our minds and imbibe a little of what Baba lived for, in our own lives and in all that we do in Baba's same.
6. The path of pure Satvik bhakti, Baba showed to us should become the sheet anchor of our lives and inspire us to share the pleasures of life with our fellow beings, men and animals alike.
7. Blessed is the devotee who has endeavorued to make Baba the be all and end all of his life, who lives in Baba, thinks of Baba, dreams of Baba, whose every thought and deed is propelled by the desire to imbibe more of Baba in himself, whose eyes get streams of tears, whose hairs on the body stand erect and whose throat gets choked with emotion on the very utterance of the word 'Sai'.

(Excerpts from Scribblings of a Shirdi Sai Devotee - by Late Sh. Suresh Chandra Gupta)

श्री साँई कृपा से अपने आजीवन सदस्य की आप-बीती

आज अपने जीवन के संस्मरण को श्री साँई की असीम अनुकम्पा तथा श्री पांडे जी (बाबा) के अनुरोध से मुझे यह लेख लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

प्रथम बार शिरडी श्री साँई बाबा के दर्शन 1989 में किए। बाबा के समक्ष एक भाव जागा कि मेरे एक पुत्र हो, क्योंकि ढ़ाई वर्ष की पुत्री साथ थी। ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट में एच०ओ०डी० डा० डेका के निरीक्षण में लेप्रोस्कोपी द्वारा ज्ञात हुआ कि गार्भाशय में रसौली है तथा एक ट्यूब बंद है। हालांकि मैं पुत्री से संतुष्ट थी, परन्तु न जाने क्यों मन में यही विचार आता कि इसका एक भाई या बहन होना आवश्यक है।

इसी कारण मैने ट्यूब खुलवाने का आप्रेशन कराना उचित समझा। सभी जांचों के उपरान्त ज्ञात हुआ कि मुझे 'टाक्सोप्लाज़्मा' है। उसके उपचार हेतु आप्रेशन जुलाई माह तक टाल दिया गया। इस दौरान मैंने अपने विश्वास को नहीं खोया, बाबा की अनुकम्पा पर मुझे पूरा भरोसा था।

कुछ मानसिक अस्वस्थता के कारण मई माह में मैं लखनऊ अपने माता-पिता के पास चली गई। जून माह में ज्ञात हुआ कि मैं गर्भवती हूँ। मैं अंचभित हो उठी और दिल्ली आकर डा० डेका को दिखाया। डा० भी अचंभित थी। डा० ने कहा "आप 'टाक्सोप्लाज़्मा' की मेडीसीन ने रही हैं, जिससे कि बच्चे को कोई भी अंग प्रभावित हो सकता है। अब तो मैं धैर्य खो चुकी थी। मैंने कहा कि पहले तो आप कहते हैं कि मैं गर्भवती नहीं हो सकती, अब कह रहे हैं कि बच्चे को मत आने दो। मेरी स्थिति देख डा० ने कहा कि पाँचवें महीने में 'जैनेटिक टेस्ट' के उपरान्त तय होगा कि बच्चा स्वस्थ है या नहीं।

मैनें स्वयं को पूर्णतया बाबा के हवाले कर दिया। पाँचवें माह में 'जैनेटिक रिपोर्ट' पॉजिटिव आई। 10 फरवरी 1992 में मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई।

यह सब बाबा की विशेष अनुकम्पा का ही फल था। आज हमारा पूरा परिवार अपनी खुशियों के लिए प्रतिफल बाबा को धन्यवाद देता है।

सुमन शर्मा

(मन्दिर में आगन्तुक भक्तों की आप-बीती कृपा-कथा लिखने का निवेदन है। बाबा के चरणों में श्रद्धा प्रगाढ़ होगी। बाबा में मान्यता का विस्तार होगा - सम्पादक)

साँई मन्दिर से साँई भजन संध्या बुकिंग करवाने के लिए बहुत ही उपयुक्त खर्चे में सभी साधन मन्दिर द्वारा प्रदान किए जाते हैं, जिसमें बाबा का दरबार, मूर्ति, पालकी, पुजारी, संगीतकार, गायक, साउण्ड सिस्टम सेवादार व आने जाने के लिए वाहन आदि सभी सम्मिलित हैं।

बुकिंग हेतु सम्पर्क करें:-

साँई बाबा मन्दिर, सैक्टर-40, नौएडा

फोन - 9868083587, 9868479688

EDITORIAL BOARD

Balkrishna Panday
0120-4238672-676
0120-4277051 *(Res.)*

Vijailakshmi Raghavan
0129-2276370
0129-2270309

S.C. Saxena
0120-4257016 *(Res.)*
9310553209 *(Mob.)*

C.P. Puri
9891219559 *(Mob.)*

MANAGEMENT COMMITTEE 2012-2014

1. SH. V.R. RAGHAVAN *(President)*
2. MAJ. GEN. R.P. CHADHA *(Vice-President)*
3. BRIG G.K. MANUCHA *(Gen. Secretary)*
4. SH. PRADEEP KUMAR JINDAL *(Treasurer)*
5. SH. M. R. BAWA *(Joint Secretary)*

EXECUTIVE MEMBERS

1. DR. NEERAJ KUMAR
2. SH. V.K. BERRY
3. SH. B.L. GARG
4. SH. DEV RAJ GOEL
5. SH. N.S. MAHARA

ARTICLES ARE INVITED FROM DEVOTEES

Published by : SHRI SAI SAMITI NOIDA, 64-D/2, F-Block, Sec-40, Noida-201303 • Ph.: 0120-4238672-676, 2575672, 2572810
Website.: esainoida.org, E-mail: shrisaisamitisec40noida@gmail.com, saimandirsec40noida@gmail.com, esainoida@gmail.com
Printed at : Sai Security Printers Ltd., 152, DLF Ind. Area, Faridabad -121003